आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 15/03/2026; Revised: 18/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

पहचान की तलाश और अस्तित्व का संघर्ष :'मेरे हिस्से की धूप' में ट्रांसजेंडर जीवन का चित्रण

सेलीष्या जोसफ
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
मार अथानासियस कॉलेज (स्वायत्त), कोतमंगलम, केरल
Mob: 9447543289
Gmail: celeeshiajoseph@macollege.in

सेलीष्या जोसफ, पहचान की तलाश और अस्तित्व का संघर्ष :'मेरे हिस्से की धूप' में ट्रांसजेंडर जीवन का चित्रण, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(63 -67)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19499421

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

सार :

समकालीन हिंदी साहित्य में हाशिए पर स्थित समुदायों के जीवनानुभवों को अभिव्यक्ति देने की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ रही है। इसी संदर्भ में नीना शर्मा हरेश के उपन्यास 'मेरे हिस्से की धूप' में ट्रांसजेंडर समुदाय के जीवन-संघर्ष, सामाजिक उपेक्षा और पहचान की तलाश का अत्यंत संवेदनशील चित्रण मिलता है। प्रस्तुत लेख में उपन्यास की मुख्य पात्र मोनी के माध्यम से ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक पीड़ा, पारिवारिक अस्वीकृति, सामाजिक भेदभाव और अस्तित्वगत संघर्ष का विश्लेषण किया गया है। समाज द्वारा स्थापित लैंगिक मानदंडों के कारण मोनी अपने भीतर शरीर और मन के द्वंद्व से जूझती है, जिससे उसकी पहचान का संकट और भी गहरा हो जाता है। परिवार, समाज और पेशेवर जीवन में उसे निरंतर अपमान और

अस्वीकार का सामना करना पड़ता है, फिर भी वह सम्मानजनक जीवन और अपनी अस्मिता की खोज के लिए संघर्ष करती रहती है। उपन्यास यह दर्शाता है कि ट्रांसजेंडर व्यक्ति भी सामान्य मनुष्यों की तरह प्रेम, संबंध और सामाजिक स्वीकृति की आकांक्षा रखते हैं। इस प्रकार 'मेरे हिस्से की धूप' ट्रांसजेंडर जीवन की त्रासदी, संघर्ष और पहचान की खोज को उजागर करते हुए समाज की संकीर्ण मानसिकता पर प्रश्नचिह्न लगाता है तथा मानवीय संवेदनशीलता और समानता की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द: ट्रांसजेंडर अस्मिता, पहचान का संकट, सामाजिक उपेक्षा।

भारतीय समाज में तीसरे लिंग को प्रायः उपेक्षित माना जाता है। मनुष्य को केवल स्त्री और पुरुष के अस्तित्व में समेटने की मानसिकता ने इतरलिंगी व्यक्तियों के प्रति हमारे मन में एक घृणित सोच को जन्म दिया है। उन्हें देखते समय हमारी आँखों पर अश्लीलता का चश्मा चढ़ा दिया गया है। परिणामस्वरूप हम इतरलिंगी लोगों को इंसान मानने या उन्हें समाज का हिस्सेदार मानने के लिए तैयार नहीं हैं। भारत के उच्चतम न्यायालय ने 15 अप्रैल 2014 को इतरलिंगी लोगों की अस्मिता को कानून का बल दिया। स्त्री और पुरुष की तरह उन्हें तीसरे लैंगिक समूह के रूप में मान्यता देने का निर्णय किया गया। परंतु विडंबना इस बात में है कि कानून ने जो भी प्रावधान बनाए हैं, उनके बावजूद सामाजिक ढाँचे के भीतर जिस नज़रिए से इन लोगों को देखा जाता है, उसमें परिवर्तन लाना आसान नहीं है। उनकी पीड़ा वास्तव में पारिवारिक स्तर से ही शुरू हो जाती है। परिवार उनके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता और उन्हें घर से दूर कर देता है। इस विशेष स्थिति में बदलाव लाने के लिए सबसे पहले हमारे मन में मौजूद पूर्वाग्रहों को मिटाना होगा। इस प्रयास में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य लंबे समय से हाशिए पर पड़े लोगों की आवाज़ बनता आया है। इसमें स्त्री, आदिवासी और दलित समुदायों के साथ-साथ अब इतरलिंगी लोगों पर भी चर्चा होने लगी है। सामाजिक संरचना ने जहाँ इतरलिंगी लोगों को समाज और जीवन के बाहर रखा है, वहीं साहित्य विभिन्न विधाओं के माध्यम से उनकी आवाज़ बनकर सामने आया है। उनके जीवन-संघर्ष, पीड़ाएँ और भोगे हुए यथार्थों का खुलासा जब साहित्य में होने लगा, तो पाठकों के मन में भी धीरे-धीरे परिवर्तन दिखाई देने लगा।

भारतीय साहित्य और संस्कृति में ट्रांसजेंडर समुदाय की उपस्थिति के उदाहरण प्राचीन काल से मिलते हैं। जब किसी व्यक्ति की आंतरिक लैंगिक पहचान और जन्म से प्राप्त जैविक लिंग में सामंजस्य नहीं हो पाता, तो उसे ट्रांसजेंडर कहा जाता है। हमारे वैदिक साहित्य में 'तृतीय प्रकृति' का उल्लेख मिलता है। प्राचीन संस्कृत भाषा में स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और उभयलिंग का भी उल्लेख मिलता है। महाभारत और रामायण में भी ट्रांसजेंडर पात्रों का वर्णन मिलता है। बृहन्नला, शिखंडी और भगवान शिव का अर्धनारीश्वर रूप आदि इसके उदाहरण हैं। परंतु कालांतर में सामाजिक संरचना में आए परिवर्तनों और पितृसत्तात्मक विचारधारा ने इतरलिंगी लोगों को नज़रअंदाज़ कर दिया। समकालीन साहित्य में हाशिए पर पड़े समुदायों के जीवन-संघर्ष को अभिव्यक्ति देने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। नीना शर्मा हरेश का उपन्यास 'मेरे हिस्से की धूप'

इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसमें ट्रांसजेंडर जीवन की त्रासदी, संघर्ष और पहचान की खोज को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र मोनी के माध्यम से लेखिका ने यह दिखाया है कि समाज की कठोर संरचनाएँ किस प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान को संकट में डाल देती हैं।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा संकट उसकी पहचान का संकट होता है। मोनी का जीवन भी इसी द्वंद्व से भरा हुआ है। वह अपने भीतर दो अलगएक —अलग व्यक्तित्वों के संघर्ष को महसूस करती है- शरीर का और दूसरा मन का।उपन्यास में मोनी की यह मानसिक स्थिति स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है-"हर पल अपने अंदर दो व्यक्तित्व को लेकर जीना, यह तय नहीं कर पाना कि वह पुरुष है या औरत"[1]। यह उद्धरण ट्रांसजेंडर व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक संघर्ष को दर्शाता है। समाज व्यक्ति की पहचान को केवल जैविक लिंग के आधार पर तय करता है, जबकि मोनी का मन स्त्रीत्व की ओर झुकता है। यही द्वंद्व उसके अस्तित्व को संकट में डाल देता है।मोनी की पीड़ा तब और स्पष्ट होती है जब वह अपनी इच्छा व्यक्त करती है—"मैं थक गयी हूँ मौसीऔरत बनना चाहती हूँ ..., पूरी औरततुम्हारी तरह ..., मम्मीकी तरह"[2]। यह कथन उसके भीतर की गहरी आकांक्षा और अधूरेपन की भावना को व्यक्त करता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के जीवन में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि परिवार उन्हें स्वीकार कर ले तो उनका संघर्ष कुछ कम हो सकता है। लेकिन अधिकतर मामलों में परिवार भी समाज के दबाव में उन्हें अस्वीकार कर देता है।उपन्यास में यह स्थिति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पजले तो मोनी को घर में सब बहुत प्यार करते हैं, लेकिन जब उसकी उपस्थिति का घरवालों के जीवन पर बुरी असर पडता है तो वह खुद को अकेली पाती है। हर्षिता के शादीशुदा जीवन में वह एक बाधा बन जाती है। उपन्यास में समाज की मानसिकता का चित्रण इस प्रकार किया गया है किलोग अपने घर में कुत्ताबिल्ली भी पाल लेते - हैं, लेकिन हिजडा को रखने केलिए कोई तैयार नहीं होती।यह कथन समाज की संकीर्ण मानसिकता और ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति व्याप्त भेदभाव को उजागर करता है।मोनी को यह भी महसूस होता है कि उसके कारण परिवार में समस्याएँ पैदा हो रही हैं। इसलिए वह घर छोड़ने का निर्णय लेने लगती है। यह स्थिति दर्शाती है कि ट्रांसजेंडर व्यक्ति अक्सर अपने ही घर में पराया महसूस करने लगता है।

ट्रांसजेंडर समुदाय के सामने सबसे बड़ी समस्या सामाजिक उपेक्षा और रोजगार की कमी है। समाज उन्हें सम्मानजनक कार्य करने का अवसर नहीं देता। परिणामस्वरूप वे मजबूरी में भीख माँगने या अपने आधे शरीर को बेचने में लग जाते हैं।उपन्यास में इस कठोर वास्तविकता को इस प्रकार व्यक्त किया गया हैहम जैसों कोम्कोई घर में नहीं रखता"—, माँ भी नहीं। कौन रखेगा हमें। यहाँ अनाथ आश्रम है, वृद्धाश्रम है, लेकिन हिजडा आश्रम नहीं है"[3]। यह वाक्य समाज की दोहरी मानसिकता को उजागर करता है। एक ओर

[1]हरेश,नीना शर्मा .मेरे हिस्से की धूप.पृ.26
[2]हरेश,नीना शर्मा .मेरे हिस्से की धूप.पृ35.
[3]हरेश,नीना शर्मा .मेरे हिस्से की धूप.पृ28.

समाज प्रगति और आधुनिकता की बात करता है, लेकिन दूसरी ओर लैंगिक विविधता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता।ट्रांसजेंडर समुदाय के सपनों और उनकी विफलताओं का चित्रण भी अत्यंत मार्मिक है। वे रात के अँधेरे में हजारों सपने तो देखते हैं, लेकिन सुबह होते ही अपने शरीर की सच्चाई पर नज़र जाते ही सारे सपने टूट जाते हैं।यह उनके जीवन की निराशा और संघर्ष को दर्शाता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति भी सामान्य मनुष्यों की तरह प्रेम, परिवार और संबंधों की इच्छा रखते हैं। लेकिन समाज उन्हें यह अधिकार नहीं देता।मोनी भी अपने भीतर मातृत्व और प्रेम की भावनाएँ महसूस करती है। वह बच्चों को देखकर स्नेह से भर उठती है, लेकिन यह सोचकर डर जाती है कि समाज उसे स्वीकार नहीं करेगा।एक स्थान पर मोनी की यह पीड़ा स्पष्ट होती है—"दिल तो मेरा भी हैबच्चों को देखकर मचलत ...ा है, प्यार करने को मन करता है, लेकिन मुझसे कोई रिश्ता बनाता ही नहीं है"[4]। यह कथन ट्रांसजेंडर जीवन की उस गहरी पीड़ा को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति के भीतर भावनाएँ तो होती हैं, लेकिन उन्हें व्यक्त करने का अधिकार नहीं होता।

मोनी का संघर्ष केवल अपनी पहचान को लेकर ही नहीं है, बल्कि अपने अस्तित्व और सम्मान की खोज भी है। वह बारबार यह प्रश्न उठाती है कि यदि भगवान ने उसे ऐसा बनाया है तो समाज उसे स्वीकार -—क्यों नहीं करता।उपन्यास में यह प्रश्न अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त होता है"कैसा भगवान हैतूने दुनिया ! बनाई, लेकिन ये तीसरी पहचान क्यों बनाई?"[5]। यह प्रश्न केवल मोनी का नहीं, बल्कि पूरे ट्रांसजेंडर समुदाय का प्रश्न है। यह समाज से जवाब माँगता है कि आखिर क्यों किसी व्यक्ति को उसकी पहचान के कारण अपमान और तिरस्कार सहना पड़ता है।

'मेरे हिस्से की धूप' में मोनी का जीवन केवल व्यक्तिगत पहचान के संकट तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके पेशेवर जीवन में भी उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मोनी एक शिक्षिका के रूप में कार्य करना चाहती है, लेकिन उसकी लैंगिक पहचान उसके करियर के रास्ते में बड़ी बाधा बन जाती है।समाज ट्रांसजेंडर व्यक्ति को एक जिम्मेदार पेशे में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता।उपन्यास में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि स्कूल का वातावरण भी उसके लिए सहज नहीं है। सहकर्मी और समाज दोनों ही उसके अस्तित्व को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। एक बच्चे की माँ प्रिंसिपल से कहती है "-आपने इन्हें स्कूल में क्यों रखा? इस जैसे की स्कूल में जगह नहीं है"[6]। यह कथन उस मानसिकता को दर्शाता है जिसमें ट्रांसजेंडर व्यक्ति को शिक्षा जैसे सम्मानित क्षेत्र में भी स्वीकार नहीं किया जाता। मोनी के सहकर्मचारियों ने भी हमेशा उससे दूरी बनायी रखी है। जब कोई नई टीचर आती वह छूत की बीमारी की तरह मोनी से दूर रहती थी। सबके सामने मोनी की बेइज़्ज़ती करें इस उद्देश्य से ही सोनल एक लडके को हिजडे का रोल

[4]हरेश,नीना शर्मा .मेरे हिस्से की धूप.पृ51.
[5]हरेश,नीना शर्मा .मेरे हिस्से की धूप.पृ75.
[6]हरेश,नीना शर्मा .मेरे हिस्से की धूप.पृ48.

करवाती है। यहाँ व्यक्त होता है कि वह एक संवेदनशील शिक्षिका बन सकती थी, लेकिन समाज की संकीर्ण सोच उसके आत्मविश्वास को कमजोर कर देती है।

इस प्रकार 'मेरे हिस्से की धूप' ट्रांसजेंडर जीवन के संघर्ष, पीड़ा और पहचान की खोज को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता है। मोनी का चरित्र ट्रांसजेंडर समुदाय के उस व्यापक अनुभव का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सामाजिक अस्वीकृति, मानसिक संघर्ष और अस्तित्व की तलाश शामिल है। वह अपने जीवन में उस धूप की प्रतीक्षा में है जो उपेक्षा और अकेलापन की अंधेरे से उसे बाहर ला सकता है। सबके हिस्से में धूप लिखी हैं", बस मेरे हिस्से में नहीं है"[7]।

पूरे उपन्यास के ज़रिए लेखिका यह दिखाया है कि जिस भारतीय समाज में अर्द्धनारीश्वर की आराधना करते हैं, उसी जनता किस तरह ट्रांसजेंडर लोगों से मुँह मोड लेते हैं। अंततः कहा जा सकता है कि 'मेरे हिस्से की धूप' केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है, बल्कि यह पहचान, अस्तित्व और सम्मान की तलाश में संघर्षरत पूरे ट्रांसजेंडर समुदाय की आवाज़ है।

सहायक ग्रंथ सूची;

1. हरेश, नीना शर्मामाया प्रकाशन :कानपुर .मेरे हिस्से की धूप ., 2020
2. मोहरा,दिलीपवाणी प्रकाशन :नई दिल्ली .हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन ., 2019

****

[7]हरेश,नीना शर्मा .मेरे हिस्से की धूप.पृ7.